सत्रिय सांस्कितक महासभा की खुली सभा में
माननीय राज्यपाल श्री गुलाब चन्द कटारिया का संबोधन

दिनांक 1 अक्टूबर 2023, रविवार	**समय : 4:30 PM**	**स्थान : श्रीमंत शंकरदव कलाक्षेत्र, पंजाबाड़ी**

- सांसद श्री भुवनेश्वर कलिता जी
- सत्रिय सांस्कृतिक महा परिषद के सलाहकार पद्मश्री श्री जतिन गोस्वामी जी
- असम के जाने-माने बुद्धिजीवी एवं पत्रकार श्री प्रफुल्ल प्राण महंत जी
- संस्था के कार्यकारी अध्यक्ष श्री घनकांत बरबायन जी
- उपाध्यक्ष श्री गोविंद सैकिया जी
- कार्यक्रम में उपस्थित अन्य अतिथिगण
- संस्था के सम्मानित कार्यकर्तागण
- देवियों और सज्जनों,

नमस्कार,

सत्रिय सांस्कृतिक महासमारोह में आप सबके बीच उपस्थित होकर प्रसन्नता हो रही है। असम की लोक संस्कृति पर आधारित इस महासमारोह में आमंत्रित करने के लिए मैं आप सभी का हृदय से आभारी हूं। इसके लिए मैं सत्रीय सांस्कृतिक महा परिषद को धन्यवाद देता हूं और कार्यक्रम की सफलता के लिए शुभकामनाएं देता हूं।

मित्रों,

जैसा कि हम सभी जानते हैं कि सत्रिय भारतीय शास्त्रीय नृत्य परंपराओं में से एक नृत्य शैली है। लेकिन यह केवल एक नृत्य शैली ही नहीं, बल्कि असम की सामाजिक, धार्मिक और कलात्मक संस्कृति है। सत्रिय नृत्य संस्कृति अध्यात्मिक विचारों, गुणों और शास्त्रों के सार की अभिव्यक्ति है।

असम के सामाजिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक और धार्मिक वृतांतों में महापुरुष श्रीमंत शंकरदेव का उच्च एवं महत्वपूर्ण स्थान है। सांस्कृतिक, अध्यात्मिक और धार्मिक क्षेत्रों में उनके योगदान से असमिया समाज में साहित्य, कला और संस्कृति का एक नया युग स्थापित हुआ। श्रीमंत शंकरदेव की शिक्षाएं और उनके द्वारा प्रचारित धार्मिक सिद्धांत "एक शरण नाम धर्म" भागवत पुराण पर आधारित थे। असम के महान संत श्रीमंत शंकरदेव ने वैष्णव धर्म के प्रचार के लिए सत्रिय नृत्य कला को एक शक्तिशाली माध्यम बनाया था।

सत्रिय संगीत, नृत्य और नाटयकता, संगीत, नृत्य, नाटक और अन्य समवर्गी कलाओं से जुड़े कलात्मक अभिव्यक्तियों के विविध रूपों का एक मिश्रित समूह है। इन रूपों का असम के आध्यात्मिक और सामाजिक जीवन में बहुत महत्व है।

आध्यात्मिक उत्साह और शैक्षिक मूल्य के साथ, सत्रिय परंपरा समुदाय के धार्मिक, सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन का एक अनिवार्य हिस्सा है। यह परंपरा मुख्यतः मौखिक रूप से एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को सौंपी जाती है, और इस प्रक्रिया में समय-समय पर मधुर और लयबद्ध सुधार भी होते हैं।

सत्र एक विशेष स्वदेशी सामाजिक संस्थागत केंद्र है, जो मुख्य रूप से असम में वैष्णववाद की एकशरण परंपरा से जुड़ा है। असम के दो लोकप्रिय संतों, महापुरुष श्रीमंत शंकरदेव और श्री श्री माधवदेव ने लोगों की सामाजिक-सांस्कृतिक जरूरतों को पूरा करने के लिए सत्रों की स्थापना की।

'सत्र' शब्द की उत्पत्ति भागवत पुराण में संस्कृत शब्द 'सत्र' से हुई है, जिसका अर्थ है भक्तों की सभा। सत्र असम के वैष्णव आंदोलन के परिणाम हैं। 16वीं शताब्दी के दौरान श्रीमंत शंकरदेव और माधवदेव के आध्यात्मिक नेतृत्व में पूरे असम में वैष्णव आंदोलन के रूप में सामाजिक-सांस्कृतिक क्रांति शुरू की गई थी। सत्र असमिया संस्कृति के प्रमुख केंद्र हैं।

भाओना-सभा, सत्रिय नृत्य और संगीत, कला और संस्कृति, नाटकीय, प्रदर्शन सत्रों की मुख्य सांस्कृतिक गतिविधियाँ हैं। सत्रिय संगीत, सत्रिय नृत्य, सत्रिय भाओना सभा, उत्सव आदि प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से असमिया लोगों को प्रभावित करते हैं। सत्रों ने नैतिक चरित्र और व्यक्तित्व के विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

सत्र नियमित रूप से श्रीकृष्ण देउल या दौल उत्सव (होली), रास यात्रा मनाते हैं, जो राधा-कृष्ण के शाश्वत प्रेम के सम्मान में रास मेले से पहले शुरू होता है। सत्र सनातन धर्म से संबंधित दुर्लभ पुस्तकों को संरक्षित करते हैं।

ये सत्र शंकरदेव और माधवदेव द्वारा रचित "बोरगीत", माटी अखाड़ा, जुमुरा नृत्य, सूत्रधार, ओज़ापाली, अप्सरा नृत्य, सत्रिय कृष्ण नृत्य, दशावतार नृत्य का खजाना है।

असम के विभिन्न स्थानों में बहुत सारी सत्र संस्थाएँ हैं। कमलाबाड़ी सत्र, दक्षिणपात सत्र, गरमुर सत्र, औनियाटी सत्र, बेंगेना अति सत्र, पाटबाउसी सत्र, बरपेटा सत्र आदि प्रमुख सत्र हैं।

श्रीमंत शंकरदेव और उनके शिष्यों श्री माधवदेव, श्री दामोदर देव और श्री हरिदेव द्वारा उपयोग की जाने वाली कुछ वस्तुओं और प्राचीन तकनीक से लिखी गईं सचिपत पुथि (पुस्तकें) इन सत्रों में अच्छी तरह से संरक्षित हैं।

मुझे खुशी है 2022 में स्थापित सामाजिक और सांस्कृतिक संस्था "सत्रिय महा परिषद" सत्रिय संस्कृति के विकास और इसके प्रचार-प्रसार के लिए निष्ठा और समर्पण के साथ काम रहा है। संस्था युवाओं को सांस्कृतिक और अध्यात्मिक सोच के अनुरूप शिक्षित कर एक संगठित समाज के निर्माण में भी महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है।

मुझे बताया गया है कि परिषद सत्रिय संस्कृति, सत्रों और नामघरों से संबंधित अन्य संस्थाओं को एक साझा मंच प्रदान करता है। क्षेत्र में सांस्कृतिक गतिविधियों के लिए सांस्कृतिक संस्थानों की स्थापना और सत्रिय संस्कृति से संबंधित पुस्तकों एवं पत्रिकाओं के प्रकाशन में भी योगदान देता है। मैं असम की संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए संस्था का हृदय से आभार व्यक्त करता हूं।

इस महासमारोह का आयोजनस्थल श्रीमंत शंकरदेव कलाक्षेत्र भी काफी मनोरम है। यह स्थान असम का प्रसिद्ध् सांस्कृतिक आकर्षण है। यह असमिया कला और संस्कृति को प्रदर्शित करता है। ऐसे पावन स्थान में सत्रिय महासमारोह का आयोजन, इसकी महत्ता को और बढ़ाता है।

मूझे पूर्ण विश्वास है कि ऐसे समारोह से असम की सत्रीय संस्कृति को बढ़ावा मिलेगा और युवा पीढ़ी इसके विकास में योगदान देने के लिए प्रेरित करेगा।

मैं एक बार फिर समारोह की सफलता के लिए हार्दिक शुभकामनाएं देता हूं।

धन्यवाद। जय हिन्द।